तबाह दिल्ली में किस्सागोई का मुकाबला

अंजुम नईम

उमैर अहमद के उपन्यास में है विविधता का प्रभाव

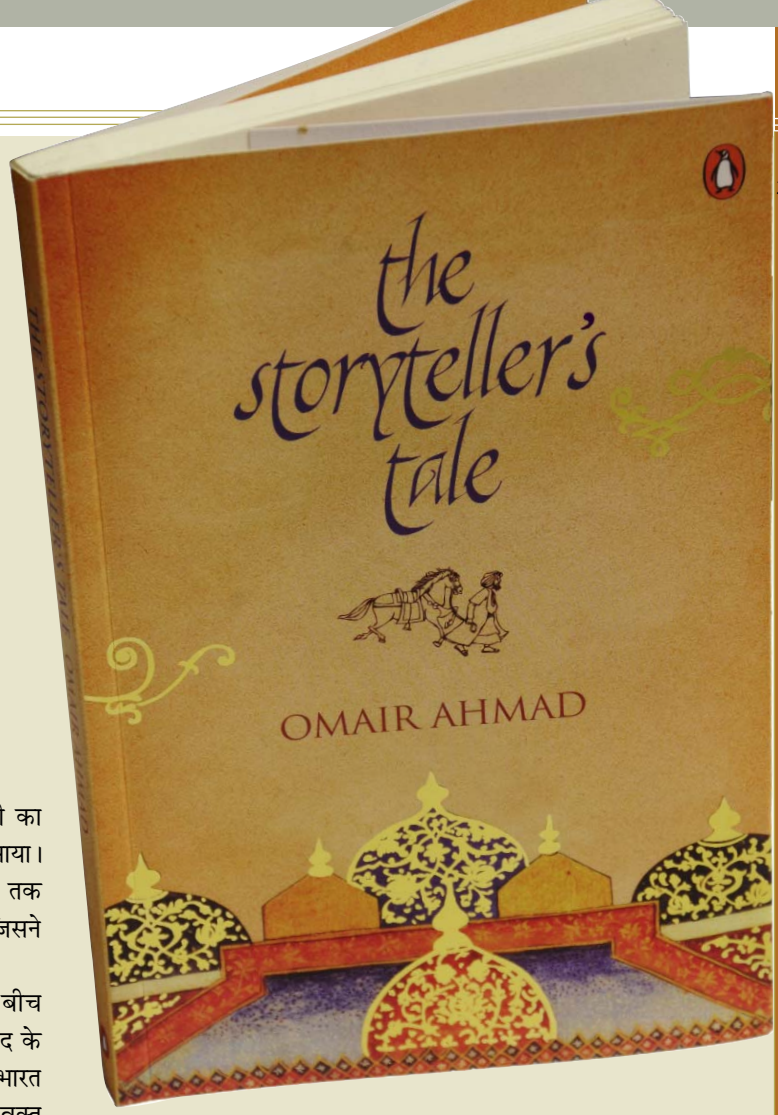

हेमंत भटनागर

ढाई सौ साल पहले अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली का भारत पर हमला दिल्ली की तबाही का पैगाम लेकर आया। शहर की तबाही सिर्फ जानों और इमारतों के नुकसान तक सीमित नहीं थी बल्कि एक तहजीब की तबाही थी जिसने इतिहास को बदल कर रख दिया।

सिराक्यूज यूनिवर्सिटी, न्यू यॉर्क से वर्ष 2001 से 2003 के बीच इंटरनेशनल रिलेशंस में मास्टर डिग्री करने वाले 34 वर्षीय उमैर अहमद के उपन्यास *द स्टोरीटेलर्स टेल* का ज़मानी हवाला 18वीं सदी का वही भारत है जिसको देखने वाला वह किस्सागो है जो अपने शहर की तबाही के वक्त वहां मौजूद नहीं था और जो अब इस तबाहहाल शहर में आया है तो उसे कोई पनाहगाह नहीं मिल रही है। टूटे दिल के साथ किस्सागो मुख्य शहर से बाहर आता है और कुछ दूरी पर एक कस्बे में रुकता है जहां अहमद शाह अब्दाली की तबाही से सुरक्षित एक खूबसूरत हवेली में उसकी मुलाकात उपन्यास के मुख्य चरित्र बेगम से होती है जो अपनी हवेली में मुलाज़िमों के साथ तन्हाई की ज़िंदगी गुजार रही है क्योंकि उसका पति बाहर गया हुआ है। बेगम को जब किस्सागो के हुनर का पता चलता है तो वह वक्त गुजारने के लिए तय करती है कि दोनों एक-दूसरे को कहानी सुनाएंगे।

इस किस्सागोई में वक्त की रफ़्तार रुक जाती है और किस्सागो और बेगम की तरफ से कुल चार कहानियां सुनाई जाती हैं। किस्सागोई की अवधि लंबी है और इस दौरान एक और कहानी किस्सागो और बेगम के दरम्यान चढ़ने वाली मोहब्बत की है। इसमें बेगम की भावनाएं तेज़ हैं मगर किस्सागो मोहब्बत की परेशानियों से वाकिफ है। इसलिए उनकी प्रेमकहानी असफल प्रेम बनकर रह जाती है।

इन चारों कहानियों के किरदार अलग-अलग हैं। किस्सागोई का ज़माना अहमद शाह अब्दाली की दिल्ली है लेकिन हर कहानी आज के समय के हवाले से हमारी तस्वीर पेश करती है। और यही कमाल है दास्तांगोई के अंदाज़ में लिखे गए इस उपन्यास की।

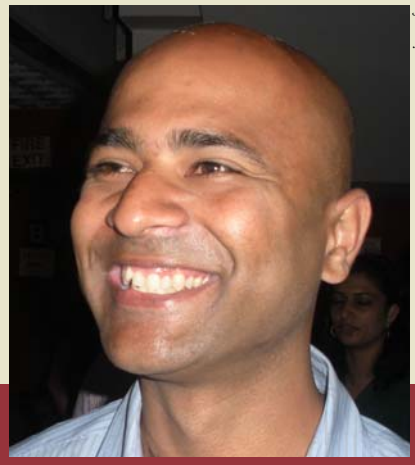

अंजुम नईम

उमैर अहमद अपने परिवार में सुनाई जाने वाली उर्दू और फारसी कहानियों और महाभारत को सुनकर बड़े हुए। वह कहते हैं, ''इसी कारण मुझे अपने विचार अभिव्यक्त करने में कोई परेशानी नहीं हुई।'' उपन्यास की चारों कहानियों पर पंचतंत्र, बाइबल के पैराबल्स और कुरानी तलमीह का प्रभाव है।

समय की सीमाओं से परे हिंसा हर दृश्य में मौजूद है। किस्सागो के दिमाग में हिंसा के अलग-अलग स्वरूपों में टकराव होता है। अहमद के अनुसार, ''हम इस तथ्य को नज़रंदाज नहीं कर पाते क्योंकि हिंसा और हिंसक प्रवृतियां किसी न किसी रूप में हम सभी को प्रभावित कर रही हैं। हमारे जैसे लोगों की ज़िंदगी में यह मुख्य रेफरेस प्वाइंट बन गया है।'' वह किस्सागोई को अपनी बात कहने का एक जरिया मानते हैं। *आउटलुक* पत्रिका और वॉयस ऑफ़ अमेरिका के लिए लिखने वाले अहमद सक्रिय राजनीतिक विश्लेषक भी हैं। भारत के कस्बों और गांवों में रहने वाले आम लोगों की ज़िंदगी पर लिखी उनकी कहानियां *सेंस टेरा* के नाम से पेजज एडिटर ने वर्ष 2008 में प्रकाशित की। उनका उपन्यास *एनकाउंटर्स* तारा प्रेस ने वर्ष 2007 में प्रकाशित किया। इसमें मुस्लिमों के एक वर्ग में बढ़ती कट्टरता के बारे में बताया गया है। *द स्टोरीटेलर्स टेल* और अहमद की अन्य रचनाएं उग्रवाद के मसले से रूबरू हैं।

और किस्सागोई के मुकाबले का क्या हुआ? आप ही तय करिए।